प्रातः क्लास 26/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?
ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। जैसे आसमान में सितारे हैं, वैसे तुम बच्चों के लिए भी गाया जाता है यह धरती के सितारे हैं। उनको भी नक्षत्र देवता कहा जाता है। अभी वह कोई देवताएँ तो है नहीं। तुम तो उनसे महान बलवान हो; क्योंकि तुम सितारे सारे विश्व को रोशन करते हो। तुम ही देवता बनने वाले हो। तुम्हारा ही उत्थान और पतन होता है। वह तो कर माण्डवे के लिए रोशनी करते हैं। उनको कोई देवता नहीं कहेंगे। तुम देवताएँ बन रहे हो। तुम सारे विश्व को रोशन करने वाले हो। अभी सारे विश्व पर घोर–अंधियारा है। पतित बन पड़े हैं। अभी बाप आकर तुम मीठे2 बच्चों द्वारा फिर से रोशन करते हैं। गायन भी है ज्ञान सूर्य प्रगटा, अज्ञान अंधेर विनाश। सूर्य को भी देवता कहते हैं। बच्चों को समझाया गया है ज्ञान सूर्य को देवता नहीं कहेंगे। वह तो तुम बच्चों को देवता बनाने आते हैं। मनुष्य लोग भी सभी को देवता समझ लेते हैं। सूर्य को भी देवता कह देते। कहाँ2 सूर्य का झण्डा भी लगाते हैं। अपन को सूर्यवंशी कहलाते हैं। वास्तव में सूर्यवंशी तो तुम हो ना। तो बाप बैठ तुम बच्चों को समझाते हैं। भारत में ही घोर–अंधियारा हुआ है। फिर भारत में ही सोझरा चाहिए। बाप तुम बच्चों को ज्ञान अजन दे रहे हैं। तुम भक्तिमार्ग के कारण अज्ञान नींद में, कुम्भकरण के नींद में सोये पड़े थे। बाप आकर फिर से जगाते हैं। कहते हैं ड्रामा के प्लैन अनुसार कल्प2, कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग पर फिर से आता हूँ। यह पुरुषोत्तम संगमयुग कोई भी शास्त्र में है नहीं। इनको अभी तुम बच्चे ही जानते हो। जब कि सितारे तुम देवता बनते हो। तुमको ही कहेंगे नक्षत्र देवताय नमः। अभी तुम पुजारी से पूज्य बनते हो। वहाँ तुम पूज्य बन जाते हो। यह भी समझने की बात है ना। इसको रूहानी पढ़ाई कहा जाता है। पढ़ाई में कब किसकी बड़ाई नहीं होती है। टीचर सिम्पल रीति पढ़ाते हैं। बच्चे ..... साधारण ..... भी बड़ाई की बात नहीं। ऐसे थोड़े ही कहते कि मैं भगवान हूँ। तुम बच्चे भी जानते हो पढ़ाने वाला निराकार शिवबाबा है। उनको अपना शरीर नहीं है। कहते हैं मैं इस रथ का लोन लेता हूँ। भागीरथ भी क्यों कहते हैं; क्योंकि बहुत भाग्यशाली रथ है। यही फिर विश्व का मालिक बनते हैं। तो भागीरथ ठहरा ना। सभी बात का अर्थ समझना चाहिए। यह है सबसे बड़ी पढ़ाई। दुनिया में तो कितने झूठ ही झूठ ही है। कहावत भी है सच की बेरी डोलेगी2 पर डूबेगी नहीं। आजकल तो अनेक प्रकार के भगवान निकल पड़े हैं। अपन को छोड़ो; परन्तु ठिक्कर भित्तर को भी भगवान कह देते हैं। भगवान को कितना रुला दिया है। बाप बैठ समझाते हैं, जैसे लौकिक बाप भी बच्चों को समझाते हैं; परन्तु वह ऐसे नहीं होते जो बाप भी हो, टीचर भी हो, गुरु भी हो। पहले बाप पास जन्म लेते हैं। फिर थोड़े बड़े होते हैं तो टीचर चाहिए पढ़ाने वाले। फिर 60 वर्ष बाद गुरु चाहिए। यह तो एक ही बाप, टीचर, सद्गुरु है। कहते हैं मैं तुम सभी आत्माओं का बाप हूँ। पढ़ती भी आत्मा है। आत्मा को ही आत्मा कहा जाता। बाकी शरीरों के नाम अनेक पड़ते हैं। ख्याल करो यह है बेहद का नाटक। कहा भी जाता है बनी बनाई बन रही.....कोई नई बात नहीं बनने की है। यह अनादि बना बनाया ड्रामा है। जो फिरता रहता है। पार्टधारी आत्माएँ हैं। आत्मा कहाँ रहती है? कहेंगी हम अपने घर परमधाम में रहने वाली हैं। फिर हम यहाँ आते हैं बेहद का पार्ट बजाने। बाप तो सदैव ही वहाँ रहते हैं। वह पुनर्जन्म में नहीं आते। अभी तुमको रचयिता बाप अपना और रचना के आदि,मध्य,अन्त का सार बैठ समझाते हैं। तुमको कहते हैं मीठे2 स्वदर्शनचक्रधारी बच्चे। इनका अर्थ और कोई समझ न सके; क्योंकि वह तो समझते हैं स्वदर्शनचक्रधारी विष्णु है। ....ह फिर मनुष्य को क्यों कहते। यह तो तुम बच्चे जानते हो हम शूद्र थे तो भी मनुष्य ही थे। अभी ब्राह्मण बने तो भी मनुष्य ही हैं, फिर देवता बनेंगे तो मनुष्य ही रहेंगे; परन्तु कैरेक्टर्स फिरते हैं। रावण आता है तो तुम्हारी कैरेक्टर्स कितनी बिगड़ जाती है। सतयुग में यह विकार होते ही नहीं। बाप तुम बच्चों को अमर कथा सुना रहे .....। भक्ति मार्ग में तुमने कितनी कथाएँ सुनी होंगी। कहते हैं अमरनाथ ने पार्वती को कथा सुनाई। अब उनको ..... शंकर सुनावेंगे ना। शिव कैसे सुनावेंगे। कितने ढेर मनुष्य जाते हैं सुनने के लिए। यह भक्तिमार्ग की बातें

बैठ सुनाते हैं। बाप ऐसे नहीं कहते कि भक्ति कोई खराब है। नहीं। यह तो ड्रामा जो अनादि है, वह समझाया जाता है। अभी बाप कहते हैं एक तो अपन को आत्मा समझो। मूल बात ही यह है। भगवानुवाच मन्मनाभव। उनका अर्थ क्या है वह बाप बैठ मुख से सुनाते हैं। तो यह गऊमुख है। यह भी समझाया है त्वमेव माताचपिता उनको कहते हैं। तो इस माता द्वारा तुम सभी को एडॉप्ट किया है। शिवबाबा कहते हैं इस मुख द्वारा तुम बच्चों को ज्ञान दूध पिलाता हूँ तो तुम्हारे जो पाप हैं वह भस्म कराये तुम्हारी आत्मा को कंचन बना देता हूँ। इन ल0ना0 की आत्मा शरीर दोनों ही कंचन, पवित्र हैं। तुम सभी की काया कंचन बनाते हो। आत्मा जब कंचन बनती है तो काया भी कंचन मिलता है। आत्मा बिल्कुल कंचन बन जाती है फिर आस्ते2 सीढ़ी उतरते हैं। अभी तुम समझ गये हो हम आत्माएँ भी कंचन थीं तो शरीर भी कंचन था। फिर ड्रामा अनुसार हम 84 के चक्र में आये हैं। अभी कंचन नहीं है। अभी तो 9 कैरेट कहेंगे। बाकी थोड़ी परसेन्ट जाकर रही है। एकदम प्रायःलोप नहीं कहेंगे। कुछ न कुछ निशान रहती है। बाप ने यह निशान भी बताया है ल0ना0 का चित्र है नम्बरवन। अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा बाप का भी परिचय आ गया है। भल अभी तुम्हारी आत्मा कंचन न बनी है; परन्तु बाप का परिचय तो बुद्धि में है ना। कंचन होने की युक्ति बतलाते हैं। आत्मा में जो खाद पड़ी है वह फिर निकलेगा कैसे। इसके लिए यह याद की यात्रा है। इनको कहा जाता है युद्ध का मैदान। तुम हरेक युद्ध के मैदान में इनडीपेन्डेन्ट सिपाही हो। अभी हरेक को जितना चाहिए पुरुषार्थ करे। पुरुषार्थ करना तो स्टुडेन्ट का काम है ना। कहाँ भी जाओ एक/दो को सावधान करते रहो। मन्मनाभव। शिवबाबा याद है? एक/दो को यही ..... देना है। बाप की पढ़ाई इशारा है तब तो बाप कहते हैं एक सेकण्ड में काया कंचन हो जाती है। विश्व .....। बाप ..... बच्चे बने तो विश्व के मालिक बन गये। फिर विश्व में है बादशाही। उनमें ऊँच पद पाना वह है पुरुषार्थ करना। ....की सेकण्ड में जीवनमुक्ति तो राइट है ना। पुरुषार्थ करना एक/दो के ऊपर है। तुम बाबा को याद करो तो तुम्हारी आत्मा एकदम पवित्र बन जावेगी। सतोप्रधान बन, सतोप्रधान दुनिया का मालिक बन जावेंगे। कितना बार तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बने हो। यह चक्र फिरता ही रहता है। इनकी कब अन्त नहीं होती। बाप कितना अच्छी रीत बैठ समझाते हैं। कहते हैं मैं कल्प3 आता हूँ। तुम बच्चे हमको छी–छी दुनिया में निमंत्रण देते हो। क्या निमंत्रण देते हो, कहते हैं हम जो पतित बन पड़े हैं। सो आप आकर बनाओ। वाह तुम्हारा निमंत्रण। कहते हो हमको सुखधाम–शान्तिधाम में ले चलो। तो तुम्हारा ओबीडियन्ट सर्वेन्ट ठहरा ना। यह भी ड्रामा का खेल है। तुम समझते हो हम कल्प2 वही पढ़ते हैं। पार्ट बजाते हैं। आत्मा ही पार्ट बजाती है ना। यहाँ बैठे भी बाप आत्माओं को देखते रहते हैं, सितारों को देखते हैं। कितनी छोटी आत्मा है। जैसे ऊपर सितारों की झिर–मिर लगी रहती है, कोई सितारा बहुत तीखा होता है, कोई हल्का, कोई चन्द्रमा के नजदीक होते हैं। तुम भी योगबल से अच्छी रीत पवित्र बनते हो तो चमकते हो। बाप भी कहते हैं ना बच्चों ..... भी जो अच्छा नक्षत्र हो तो उनको फूल दो। बच्चे भी एक/दो को जानते तो हैं ना। बरोबर कोई बहुत तीखे होते हैं कोई ढीले। उन सितारों को देवता नहीं कह सकते। तुम भी हो मनुष्य; परन्तु तुम्हारी आत्माओं को बाप पवित्र बनाकर विश्व का मालिक बना देते हैं। कितनी ताकत बाप वरसे में देते हैं। ऑलमाइटी बाबा है ना। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों को इतनी माइट देता हूँ। गाते भी हैं ना शिवबाबा आप जो हमको बैठकर पढ़ाकर माइट से देवता बनाते हैं। वाह। ऐसा तो कोई नहीं बनाते। पढ़ाई सोर्स ऑफ इनकम है। सारा आसमान, (धर)ती आदि सभी हमारा ही हो जाता। कोई छीन भी न सके। इसको कहा जाता है अडोल, अखण्ड राज्य। कोई खण्डन कर न सके। कोई हिला न सके। तो ऐसे बाप की श्रीमत पर चलना चाहिए ना। हरेक को अपना पुरु0 करना है। बच्चे म्युजियम आदि बनाते हैं कि इन चित्रों आदि द्वारा हमजिन्स को समझावें। बाप डायरेक्शन देते ....ते हैं। जो चित्र चाहिए भल बनाओ। बुद्धि तो सभी काम करती है। मनुष्यों के कल्याण के लिए ही यह बनाये

..... हैं। तुम जानते हो सेन्टर में तो कब कोई आते हैं। अभी ऐसा युक्ति करें जो आपे ही लोग आ जायें मिठाई लेने लिए। किसकी अच्छी मिठाई होती है एडवरटाइज हो जाती है। एक/दो को कहेंगे फलानी दुकान पर जाओ। यह तो बड़ी अच्छी ते अच्छी मिठाई है। ऐसे कोई दे न सके। एक देखकर जाते हैं, फिर दूसरे को भेजते हैं। ख्याल तो चलाना है ना। सारा भारत कैसे गोल्डेन एज में आवे। इसके लिए कितना तुम समझाते हो; परन्तु पत्थर बुद्धि हैं ना। मेहनत तो लगेगी। शिकार करना भी सीखना पड़ता है। पहले2 छोटा शिकार सीखा जाता है। बड़े शिकार लिये तो ताकत चाहिए ना। कितने बड़े2 शेर हैं। बड़े2 विद्वान पंडित, वेद, शास्त्र आदि पढ़े हुए हैं। अपन को कितनी बड़ी अथॉरिटी समझते हैं। बनारस में कितने बड़े2 उन्हों को टाइटल्स मिलते हैं। तब बाबा ने कहा था पहले2 तो बनारस को घेराव डालो। जहाँ से झूठे टाइटल ले आते हैं; परन्तु देखने में आता है यह शास्त्रों की अथॉरिटी वाले अभी नहीं झुकेंगे। ऐसे कोई भी निकला न है जो लिख कर दे कि बरोबर गीता का भगवान तो शिव ही है। बड़ों का आवाज़ निकले तब कोई सुने। छोटे की तो कोई बात सुनते ही नहीं। मारना है शेर। जो अपन को शास्त्रों की अथॉरिटी समझते हैं। कितने बड़े2 टाइटिल देते हैं। शिवबाबा को भी इतने बड़े टाइटिल नहीं है। भक्तिमार्ग का राज्य है ना। फिर होता है ज्ञानमार्ग का राज्य। ज्ञान मार्ग में भक्ति होती नहीं। भक्ति में फिर ज्ञान बिल्कुल नहीं होता। तो यह बाप बैठ समझाते हैं। बाप देखते भी ऐसे हैं समझते हैं यह सितारे बैठे हैं। देह का भान छोड़ना है। जैसे ऊपर में सितारों की झिर–मिर लगी हुई है वैसे यहाँ भी झिर–मिर लगी हुई है। कोई बहुत तीखे रोशनी वाले बन गये हैं। यह है धरती के सितारे। जिनको ही देवता कहा जाता है। यह कितना बड़ा बेहद का माण्डवा है। बाप समझाते हैं यह है हद का रात और दिन। यह फिर है आधा कल्प बेहद का दिन आधा कल्प बेहद की रात। दिन में सुख ही सुख है। भक्ति में है दुख। दिन में कहीं भी धक्के आदि खाने की दरकार ही नहीं। ज्ञान में (सु)ख, भक्ति में है दुख। अपरम्अपार दु.... है। सतयुग में दुख का ..... वहाँ काल होता नहीं। तुम काल पर विजय पाते हो। मृत्यु का नाम नहीं ..... है अमरलोक। तुम ..... हो बाप हमको अमरकथा सुना रहे हैं अमरलोक के लिए। अभी तुम मीठे2 ..... ऊपर से लेकर सारा चक्र बुद्धि में है। जानते हो हम आत्माओं का घर है ब्रह्मलोक। वहाँ से यहाँ आते हैं नम्बरवार पार्ट बजाने। ढेर आत्मा हैं। एक–एक का थोड़े ही बैठ बतावेंगे। नटशेल में बताते हैं। कितनी डार–टारियाँ निकलते2 झाड़ वृद्धि को पा लेता है। बहुत हैं जिनको अपने धर्म का पता ही नहीं है। बाप आकर समझाते हैं तुम असल देवी–देवता धर्म के हो; परन्तु अभी धर्म भ्रष्ट कर्म भ्रष्ट बन गये हो। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है हम असल में रहने वाले शान्तिधाम के हैं। फिर आते हैं पार्ट बजाने। पहले–2 इन ल0ना0 का राज्य था। इनकी डिनायस्टी थी। तुमको और कुछ भी याद नहीं है सिवाय इस ज्ञान के। बाप और हम आत्माएँ ऊपर में रहते हैं। अभी फिर संगम पर खड़े हैं। बाप ने बताया है तुम सूर्यवंशी थे, फिर चन्द्रवंशी, फिर वैश्यवंशी फिर, शूद्र वंशी बने हो। बाकी बीच में तो है बायप्लाट। यह खेल है ना बेहद का। अभी यह कितना छोटा झाड़ है। ब्राह्मणों का कुल है। फिर कितना बड़ा हो जावेगा। सभी को देख, मिल भी न सकेंगे। जहाँ–तहाँ घेराव डालते जाते हैं। बाप भी कहते हैं देहली को, बनारस को घेराव डालो। फिर कहते हैं सारी दुनिया को तुम घेराव डालने वाले हो। तुम यो(ग)बल से सारी दुनिया का राज्य अपने हाथ में करते हो कितनी खुशी होती है। कोई कहाँ, कोई कहाँ जाते रहते हैं। अभी तुम्हारी कोई बात ही नहीं सुनते। जब बड़े–2 आवेंगे अखबारों में पड़ेगा तब समझेंगे। अभी तो छोटा शिकार होता है। बड़े2 साहुकार लोग तो समझते हैं स्वर्ग हमारे लिए यहाँ ही है। गरीब ही आकर वरसा लेते हैं। कहते बाबा मेरे तो आप दूसरा न कोई; परन्तु जब मोह ममत्व सारी दुनिया से भी टूटे ना। अभी तुम्हारे लिए नई दुनिया बन रही है। बाप ने मिसाल भी दिया है पुराने मकान और नये मकान का। नया मकान तैयार होता है तो फिर पुराने से दिल टूट जाती है। बाप कहते हैं इन सभी से बुद्धि योग तोड़ मेरे साथ जोड़ो। और कोई में ममत्व न रखो।

धन तो लाखों कमाते रहेंगे; परन्तु वह काम नहीं आना है। तुम गवर्नर को बोलो हम अपने ही खर्चा से गवर्मेन्ट हाउस में यह चित्र लगा दें। आप सिर्फ अलौ करो। अलौ करेंगे? कभी नहीं। आज एक गवर्नर है कल दूसरा आया कहेंगे निकालो बाहर। कोई के हाथ में नहीं है जो परमानेन्ट दे सके। बाप तो कहते हैं गवर्नर हाउस को घेराव डालो; परन्तु अभी नहीं समझेंगे। विलायत वाले चाहते हैं प्राचीन भारत का योग कौन सा था जिससे भारत पैराडाइज बना था। अभी यह तो सिवाय तुम्हारे कोई बता न सके। सन्यासी उनको पकड़कर ले आते हैं। चलो तो हम तुमको योग सिखावें। होता कुछ भी नहीं है। यह भी तुम समझते हो। तुम्हारे बिगर कोई की ताकत नहीं जो योगबल से विश्व का मालिक बनावे। वह तो है ही हठयोग। उनका धर्म ही है अलग। वह है हठयोग। तुम हो राजयोगी। वास्तव में शंकराचार्य आदि गीता को हाथ नहीं लगा सके; क्योंकि गीता तो है प्रवृत्ति मार्ग वालों के लिए। वह दोनों को पवित्रता का ज्ञान दे न सके। गीता उनका धर्म–शास्त्र नहीं है। यह है ही तुम्हारा। बाप कहते हैं मैं ब्राह्मण, देवता, क्षत्री धर्म स्थापन करता हूँ। आता भी भारत में हूँ। यह भारत अविनाशी खण्ड है। यह कब विनाश को नहीं पाता। आबू को भी जोर से उठाना है। यह तो सबसे बड़ा तीर्थ है। फॉरेनर्स को भी दिखावेंगे। नीचे लोग तपस्या में बैठे हैं। ऊपर में है स्वर्ग की बादशाही। तुम चैतन्य में बैठे हो। तुम्हारा अव्यक्त नाम की लिस्टें भी छपनी चाहिए। बाबा ने तुम्हारा नाम कैसे बदली किया। यह भी बताना चाहिए ..... कितने रमणीक नाम रखे। देवताओं से भी तुम बहुत रमणीक हो। तुमको बाप बैठ पढ़ाते हैं। बाप कहते हैं मैं देवताओं की सर्विस में नहीं, पतितों की सर्विस में ही आता हूँ। तो तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए हमको ज्ञान का सागर बाप बैठ पढ़ाते हैं। वह भी है बिन्दी। इस शरीर में प्रवेश करते हैं। वन्डर है ना। वन्डर ते ..... चीज है आत्मा और परमात्मा। जिसमें सारा पार्ट भरा हुआ है। कैसी वन्डरफुल हैं यह बातें किसकी भी ....न सके। कितनी ..... में पार्ट भरा हुआ है। कब घिसती नहीं। कुदरत ही कहेंगे। बस। एक बाप ही आकर यह बातें .....। उनसे ऊपर तो कोई है नहीं। उनका पार्ट ही नूँध हुआ है जो कब खत्म होने का नहीं है। तुम बच्चों को ही यह बाप बैठ समझाते हैं। तो बच्चों को बहुत ही खुशी में रहना चाहिए। बाप को भी याद करना है। सभी को रास्ता बताना है। तुम बच्चे कल्प2 जो पार्ट बजाते आये हो ....ही होता रहता है। कल्प2 वही होगा। सेकण्ड व सेकण्ड ड्रामा सर्विस कराती रहती है। मनुष्यों को तो ड्रामा का बिल्कुल ही पता नहीं है। वह कहते हैं परमात्मा सर्वशक्तिवान है। बाप कहते हैं यह ड्रामा सर्वशक्तिवान है। मैं भी ड्रामा के बन्धन में बांधा हुआ हूँ। मैं अपने समय पर ही आता हूँ। तुम यहाँ लेट भी आ जाते हो। मैं तो बिल्कुल एक्युरेट टाइम पर आता हूँ काँटों को फूल बनाने। वह है फूलों का बगीचा। यह है काँटों का जंगल। गॉर्डेन ऑफ अल्ला। फारेस्ट ऑफ शैतान। कितना स्वीट बाप है। बलिहारी शिवबाबा की। ड्रामा अनुसार रथ भी साथ में है। यह भी कम नहीं है। प्रजापिता तो जरूर एडॉप्टेड चिल्ड्रेन्स होंगे ना। यह हो गया ग्रेट2 ग्रैन्ड फादर। शिवबाबा को तो सिर्फ फादर ही कहेंगे। तो बड़ा कौन हुआ। बड़ा हो जाता है जिनको सिर्फ फादर ही कहते हैं। ग्रेट2 ग्रैन्ड फादर जिसको कहा जाता वह पूजा नहीं जाता। यह किसको थोड़े ही पता है ब्रह्मा की आत्मा फिर जाकर क्या बनती है। बाबा खुद ही कहते हैं मैं जिसमें प्रवेश करता हूँ वह नम्बरवन पतित है। फिर नम्बनवन पावन बनते हैं। गीता में श्रीकृष्ण का नाम लिख दिया है। अभी कृष्ण में ....से बाप प्रवेश करेंगे। कृष्ण द्वारा तो मैं गीता सुनाता नहीं हूँ। मैं तो नई दुनिया में आता ही नहीं हूँ। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।